दिनांक: 19 ज़ुल-हिज्जाह 1447 हिजरी | मुताबिक़: 5 जून 2026 ईस्वी

مَنْزِلَةُ الِاحْتِرَامِ فِي الْإِسْلَامِ

इस्लाम में आदर-सम्मान का मर्तबा

सारी तारीफ़ें उस अल्लाह के लिए हैं जो हमेशा से सब कुछ जानने वाला और हर चीज़ पर ताक़त रखने वाला है। जिसने इंसान को रास्ता दिखा दिया, अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्रा। अतः जिसने शुक्र किया उसका बदला अल्लाह की नेमतें और बहुत बड़ी बादशाही है, और जिसने नाशुक्री की, वह अल्लाह के सिवा अपना कोई रक्षक न पाएगा।

और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, ऐसी गवाही जो अंधेरे को रोशनी में, और तंगी को ख़ुशहाली व सुकून में बदल दे। और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी मुहम्मद ﷺ उसके बंदे और रसूल हैं, जिन्हें ख़ुशख़बरी देने वाला, डराने वाला, उसके हुक्म से उसकी तरफ़ बुलाने वाला और एक चमकता हुआ चिराग़ बनाकर भेजा गया। ऐ अल्लाह! उन पर, उनके परिवार और उनके सहाबा पर बहुत बहुत दरूद व सलाम उतार।

ऐ अल्लाह के बंदो!

मैं आपको और अपने आप को अल्लाह से डरने और परहेज़गारी अख़्तियार करने की वसीयत करता हूँ, जैसा कि अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है:

{ يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ } [الحشر: 18].

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और हर जान यह देखे कि उसने कल (आख़िरत) के लिए आगे क्या भेजा है, और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह उससे बाख़बर है जो तुम करते हो।" (सूरह अल्-हश्रः 18)

ऐ अल्लाह के बंदो!

इस्लाम के अच्छे अख़लाक़ में से एक खास अख़लाक़ आदर-सम्मान है, जो पाकीज़ा दिल, बुलंद किरदार और संतुष्ट नफ़्स से पैदा होता है। आदर-सम्मान का असल मतलब दूसरों की

क़द्र व मंज़िलत (मूल्य) को मानना और उनके साथ इज़्ज़त, शराफ़त और अच्छे बर्ताव के साथ पेश आना है।

क़ुरआन और सुन्नत का गहराई से अध्ययन करने वाला इंसान अच्छी तरह महसूस करता है कि इस्लाम ने ज़िंदगी के हर क्षेत्र में आदर-सम्मान पर बहुत ज़ोर दिया है; इसीलिए शरीयत ने अच्छी बात कहने और हँसमुख चेहरे के साथ पेश आने का हुक्म दिया है, जबकि अश्लीलता, बदज़ुबानी, गाली-गलौज और दिल दुखाने से सख़्ती के साथ मना किया है; चाहे वह किसी ग़ैर-मुस्लिम के साथ ही क्यों न हो। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

{وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا } [البقرة: 83]

"और लोगों से अच्छी बात कहो।" (सूरह अल्-बकराः 83)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा:

«إِنَّ مِنْ خِيارِكُمْ أَحاسِنَكُمْ أَخْلَاقاً»

"तुम में सबसे अच्छे लोग वो हैं जिनके अख़लाक़ सबसे अच्छे हैं।" (सही बुख़ारी, सही मुस्लिम)

शायर कहता है:

صَلاحُ أَمْرِكَ لِلأَخْلاقِ مَـرْجِعُهُ فَقَـوِّمِ النَّفْسَ بِالأَخْلاقِ تَسْتَقِمِ
وَالنَّفْسُ مِنْ خَيْرِها فِي خَيْرِ عافِيَةٍ وَالنَّفْسُ مِنْ شَرِّها فِي مَرْتَعٍ وَخِمِ

"तुम्हारे मामलात के सुधार का आधार अख़लाक़ पर है, अतः अपने नफ़्स को अख़लाक़ के ज़रिए सँवारो, वह सीधा हो जाएगा। और नफ़्स अपनी नेकी की बदौलत बेहतरीन सलामती में रहता है, जबकि अपनी बुराई के कारण तबाहकुन और ख़तरनाक चरागाह में जा गिरता है।"

मेरे प्यारे मुसलमान भाइयो!

लोगों के दरमियान आदर-सम्मान की कई सूरतें और अलग-अलग शक्लें हैं। इनमें से सबसे बड़ी सूरत: अल्लाह और उसके रसूल का आदर-सम्मान और उसके दीन की इज़्ज़त करना है। और यह शरीयत के अहकामात की इज़्ज़त करने और अल्लाह की मर्यादाओं का ख़्याल रखने से ही मुमकिन है। पवित्र क़ुरआन ने इसकी ओर रहनुमाई की है:

{ ذَلِكَ وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ} [الحج: 32]

"यह बात है, और जो कोई अल्लाह की निशानियों की इज़्ज़त करे, तो बेशक यह दिलों के तक़्वे में से है।" (सूरह अल्-हजः32)

आदर-सम्मान की एक अहम सूरत यह भी है: पाकीज़ा और अच्छे अलफ़ाज़ का चुनाव करना, और दिल दुखाने वाली बातों और अपमानजनक इशारों से बचना। इन दोनों बातों के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है:

{وَيْلٌ لِكُلِّ هُمَزَةٍ لُمَزَةٍ} [الهمزة: 1]

"तबाही है हर उस आदमी के लिए जो ताने देने वाला, बुराई करने वाला हो।" (सूरह अल्-हुमज़हः1)

चूँकि 'अल्-हुमज़ह' से मुराद अमल के ज़रिए बुराई करना और आँखों के इशारों से छोटा या तुच्छ समझना है, और 'अल्-लुमज़ह' से मुराद ज़ुबान से बुराई करना है। इसके विपरीत, अल्लाह तआला भलाई का हुक्म देता है:

{ وَقُلْ لِعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُبِينًا} [الإسراء: 53]

"और मेरे बंदों से कह दीजिए कि वो बात कहा करें जो सबसे अच्छी हो। बेशक शैतान उनके बीच फ़साद डालता है। यक़ीनन शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।" (सूरह अल्-इस्राः 53)

प्यारे भाइयो!

आदर-सम्मान की शानदार सूरतों में से एक यह भी है: लोगों की अक़्लों (सोच) का इहतिराम करना और निहायत अच्छे अंदाज़ में सुधार की तरफ़ उनकी रहनुमाई करना।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है: एक नौजवान नबी करीम ﷺ की सेवा में आया और कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे ज़िना (व्यभिचार) की इजाज़त दे दीजिए। यह सुनकर लोग उसकी तरफ़ लपके और उसे झिड़कते हुए कहा: रुक जा! रुक जा! नबी करीम ﷺ ने कहा: क़रीब आ जाओ। वह क़रीब आकर बैठ गया। आप ﷺ ने कहाः "क्या तुम इस काम को अपनी माँ के लिए पसंद करते हो?" उसने कहा: मुझे अल्लाह आप पर क़ुर्बान करे, नहीं, अल्लाह की क़सम! (नहीं)। आप ﷺ ने कहाः "इसी तरह लोग भी इसे अपनी माओं के लिए पसंद नहीं करते।" आप ﷺ ने कहाः "क्या तुम इसे अपनी बेटी के लिए पसंद करते हो?" उसने कहा: मुझे अल्लाह आप पर क़ुर्बान करे, नहीं, अल्लाह की क़सम! (नहीं)। आप ﷺ ने कहाः "लोग भी इसे अपनी बेटियों के लिए पसंद नहीं करते।"

आप ﷺ ने कहाः "क्या तुम इसे अपनी बहन के लिए पसंद करते हो?" उसने कहा: मुझे अल्लाह आप पर क़ुर्बान करे, नहीं, अल्लाह की क़सम! (नहीं)। आप ﷺ ने कहाः "लोग भी इसे अपनी बहनों के लिए पसंद नहीं करते।" आप ﷺ ने कहाः "क्या तुम इसे अपनी फूफी के लिए पसंद करते हो?" उसने कहा: मुझे अल्लाह आप पर क़ुर्बान करे, नहीं, अल्लाह की क़सम! (नहीं)। आप ﷺ ने कहाः "लोग भी इसे अपनी फूफियों के लिए पसंद नहीं करते।" आप ﷺ ने कहाः "क्या तुम इसे अपनी ख़ाला के लिए पसंद करते हो?" उसने कहा: मुझे अल्लाह आप पर क़ुर्बान करे, नहीं, अल्लाह की क़सम! (नहीं)। आप ﷺ ने कहाः"लोग भी इसे अपनी ख़ालाओं के लिए पसंद नहीं करते।" रावी कहते हैं: फिर आप ﷺ ने अपना पवित्र हाथ उस पर रखा और दुआ की:

«اللَّهُمَّ اغْفِرْ ذَنْبَهُ، وَطَهِّرْ قَلْبَهُ، وَحَصِّنْ فَرْجَهُ»

"ऐ अल्लाह! इसके गुनाह माफ़ कर दे, इसके दिल को पाक कर दे और इसकी शर्मगाह की हिफ़ाज़त फरमा।" इसके बाद उस नौजवान ने कभी ऐसी किसी चीज़ की तरफ़ आँख उठा कर भी नहीं देखा। (इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया और शैख़ शुऐब अरनाऊत ने इसे सही क़रार दिया है)।

लोगों की अक़्लों के इहतिराम में से यह भी है कि उनके समझने की सलाहियत के अंतर का ख़्याल रखा जाए; ख़ास तौर पर जब हम जानते हैं कि लोग अपनी अक़्ल, समझ और शिक्षा में एक दूसरे से अलग होते हैं। चुनाँचे सही बुख़ारी की रिवायत है, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं:

حَدِّثُوا النَّاسَ بِما يَعْرِفُونَ؛ أَتُحِبُّونَ أَنْ يُكَذَّبَ اللهُ وَرَسُولُهُ؟

"लोगों से वो बातें करो जिन्हें वो जानते और समझते हों; क्या तुम पसंद करते हो कि अल्लाह और उसके रसूल को झुठलाया जाए?"

दीनी भाइयो!

आदर-सम्मान की सूरतों में से एक सूरत है: ग़ैर-मुस्लिमों (काफ़िरों) को भी बेहतर अंदाज़ में दावत देना; बिना दिल दुखाए, गाली-गलौज और डाँट-डपट के। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

{ ادْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ} [النحل: 125]

"अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत और बेहतरीन नसीहत के साथ बुलाइए, और उनसे ऐसे तरीक़े से बातचीत कीजिए जो सबसे बेहतर हो। बेशक आपका रब उसे ख़ूब जानता है जो उसके रास्ते से भटक गया है, और वह हिदायत पाने वालों को भी अच्छी तरह जानता है।" (सूरह अल्-नह्लः 125)

आदर-सम्मान की एक अति सुंदर और शानदार सूरत यह है: **लोगों के दरमियान भेदभाव न करना।** चुनाँचे जज अपने फ़ैसले में कमज़ोर और बड़े इंसान के दरमियान कोई फ़र्क़ न करे, डॉक्टर ग़रीब के इलाज पर उतना ही ध्यान दे जितना अमीर के इलाज पर देता है, शिक्षक विद्यार्थियों के बीच भेदभाव वाला सुलूक न करे, बाप अपनी औलाद के बीच बराबरी करे, और शौहर अपनी बीवियों के बीच इंसाफ़ करे। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

{إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَى وَيَنْهَى عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ} [النحل: 90]

"बेशक अल्लाह इंसाफ़, भलाई और रिश्तेदारों को देने का हुक्म देता है और बेहयाई, बुरे कामों और ज़्यादती से मना करता है, वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम याद रखो।" (सूरह अल्-नह्लः 90)

उम्म अब्दिल्लाह हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस में है कि नबी करीम ﷺ ने कहा:

«إِنَّما أَهْلَكَ الَّذِينَ قَبْلَكُمْ: أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ فِيهِمُ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذا سَرَقَ فِيهِمُ الضَّعِيفُ أَقامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ، وَايْمُ اللهِ، لَوْ أَنَّ فاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ، لَقَطَعْتُ يَدَهَا» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ]

"तुमसे पहले के लोगों को इसी चीज़ ने बर्बाद किया कि जब उनमें कोई बड़ा आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते, और जब कोई कमज़ोर चोरी करता तो उसे सज़ा देते। अल्लाह की क़सम! अगर फ़ातिमा बिन्त-ए-मुहम्मद (ﷺ) भी चोरी करतीं, तो मैं उनका हाथ भी काट देता।" (सही बुख़ारी, सही मुस्लिम)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं:

«شَرُّ الطَّعامِ طَعامُ الوَلِيمَةِ، يُدْعَى لَها الأَغْنِياءُ، وَيُتْرَكُ الفُقَراءُ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ]

"सबसे बुरा खाना उस वलीमे का खाना है जिसमें अमीरों को बुलाया जाए और ग़रीबों को छोड़ दिया जाए।" (सही बुख़ारी, सही मुस्लिम)

प्यारे मुसलमान भाइयो! बीमार, कमज़ोर और विकलांग लोगों का भी आदर-सम्मान किया जाए और उनकी हालत का ख़्याल रखा जाए। उनके साथ ऐसा व्यवहार किया जाए जो उनकी परेशानी और तंगी को दूर कर दे। हज़रत उस्मान बिन अबील आस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने निवेदन किया: या रसूलल्लाह! मुझे मेरी क़ौम का इमाम बना दीजिए। आप ﷺ ने कहा:

«أَنْتَ إِمامُهُمْ، وَاقْتَدِ بِأَضْعَفِهِمْ»

"तुम उनके इमाम हो, और उनमें से जो सबसे कमज़ोर हो उसकी हालत का ख़्याल रखना।" (इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी रहिमहुल्लाह ने इसे सही क़रार दिया है)।

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में वर्णित है कि वह पीलू के पेड़ से मिस्वाक तोड़ रहे थे, और उनकी पिंडलियाँ बहुत पतली थीं। हवा की वजह से जब वह हिलने झूलने लगे तो लोग उन पर हँसने लगे। रसूलुल्लाह ﷺ ने पूछा: तुम किस बात पर हँस रहे हो? सहाबा ने कहा: ऐ अल्लाह के नबी! उनकी पिंडलियों के पतलेपन पर हमें हँसी आ रही है)। आप ﷺ ने कहा:

«وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لَهُمَا أَثْقَلُ فِي الْمِيزَانِ مِنْ أُحُدٍ»

"उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, ये दोनों पिंडलियाँ क़ियामत के दिन तराज़ू में उहुद पहाड़ से भी ज़्यादा भारी होंगी।" (इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है और इसे शेख़ शुऐब अल-अरनाऊत रहिमहुल्लाह ने सही क़रार दिया है)।

आदर-सम्मन की सूरतों में से एक सूरत यह भी है: लोगों के उन रस्म-ओ-रिवाज और आदतों का इहतिराम करना जो दीने-इस्लाम से नहीं टकराते। अल्लाह तआला ने कहा:

{ خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ} [الأعراف: 199]

"माफ़ी से काम लीजिए, और नेकी (उर्फ़) का हुक्म दीजिए, और जाहिलों से दूर रहिए।" (सूरह अल्-आराफ़: 199)

यहाँ 'उर्फ़' से मुराद भलाई के वो काम हैं जिन्हें लोग आपस में पहचानते हैं और समाज में जिसका चलन होता है।

अल्लाह मुझे और आपको उन लोगों में शामिल करे जिनके अख़लाक़ अच्छे हों और जो उसकी सृष्टि के साथ भलाई करने वाले हों। मैं अपनी यह बात कहता हूँ, और अपने लिए, आपके लिए और सारे मुसलमानों के लिए अल्लाह से माफ़ी तलब करता हूँ, अतः आप भी उसी से माफ़ी माँगें; बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला, अति दयालु है।

दूसरा ख़ुत्बा

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, और मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ﷺ उसके बंदे, रसूल और चुने हुए नबी हैं। अल्लाह तआला उन पर, उनके परिवार, उनके सहाबा और उनसे मोहब्बत रखने वालों पर बहुत बहुत दरूद-ओ-सलाम उतारे।

आदर-सम्मन की सूरतों में से एक माता-पिता का इहतिराम और उनके साथ अदब से पेश आना भी है। इमाम बुख़ारी रहिमहुल्लाह की किताब 'अल-अदब अल-मुफ़्रद' में है:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो आदमियों को देखा, तो उनमें से एक से पूछा: ये तुम्हारे क्या लगते हैं? उसने कहा: ये मेरे वालिद (पिता) हैं। तो हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा:

«لا تُسَمِّهِ بِاسْمِهِ، وَلا تَمْشِ أَمَامَهُ، وَلا تَجْلِسْ قَبْلَهُ»

"उन्हें उनके नाम से न पुकारना, उनके आगे न चलना, और उनसे पहले न बैठना।" (इस हदीस को अल्लामा अल्बानी ने सही क़रार दिया है)।

इसी तरह **हुक्मरानों, उलमा, हुफ़्फ़ाज़-ए-क़ुरआन (क़ुरआन याद रखने वालों) और बुज़ुर्गों** का इहतिराम करना भी ज़रूरी है। हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि नबी करीम ﷺ ने कहा:

«إِنَّ مِنْ إِجْلالِ اللهِ تَعالى: إِكْرامَ ذِي الشَّيْبَةِ المُسْلِمِ، وَحامِلِ القُرْآنِ غَيْرِ الغالِي فِيهِ وَالجافِي عَنْهُ، وَإِكْرامَ ذِي السُّلْطانِ المُقْسِطِ»

"बेशक बूढ़े और बुजुर्ग मुसलमान की इज़्ज़त करना, और हाफ़िज़-ए-क़ुरआन की इज़्ज़त करना जो उसमें ग़ुलू (हद पार करना) और तक़्सीर (कमी) से बचता हो, इसी तरह इंसाफ़ करने वाले हाकिम की इज़्ज़त करना, अल्लाह की इज़्ज़त का हिस्सा है।" (इस हदीस को इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने इसे हसन क़रार दिया है)।

मुसलमान भाइयो!

हमें इस महान अख़लाक़ की कितनी ज़्यादा ज़रूरत है! आदर-सम्मान से कितनी ही मोहब्बतें और उल्फ़तें पैदा होती हैं, और इससे कितने ही शानदार फल हासिल होते हैं! यक़ीनन लोग उस आदमी से मोहब्बत करते हैं जो उनके साथ अच्छे व्यवहार से पेश आए, चाहे वह व्यवहार एक अच्छे बोल और सच्ची मुस्कुराहट की शक्ल में ही क्यों न हो। और लोग उस आदमी को पसंद नहीं करते जो उनके साथ बुरा व्यवहार करे, चाहे वह हक़ और नेकी पर ही क्यों न हो।

शायर कहता है:

أَحْسِنْ إِلَى النَّاسِ تَسْتَعْبِدْ قُلُوبَهُمْ فَطالَما اسْتَعْبَدَ الإِنْسانَ إِحْسانُ

"लोगों के साथ एहसान करो, तुम उनके दिलों को अपना गुलाम बना लोगे। क्योंकि एहसान हमेशा से इंसान को अपना ग़ुलाम बनाता आया है।"

अल्लाह के बंदो!

हमें यह जान लेना चाहिए कि अल्लाह के कर्तव्यों को पूरा करने और उसके बंदों के साथ अच्छा व्यवहार करने के बीच कितना गहरा संबंध है। अल्लाह तआला कहता है:

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ {البقرة: 83}

"और जब हमने बनी इसराईल से पक्का वादा लिया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करोगे, और माता-पिता, रिश्तेदारों, यतीमों और ग़रीबों के साथ अच्छा व्यवहार करोगे, और लोगों से अच्छी बात कहोगे, और नमाज़ क़ायम करोगे और ज़कात अदा करोगे।" (सूरह अल्-बक़राः 83)

ऐ अल्लाह! अपने बंदे और नबी मुहम्मद ﷺ पर दरूद-ओ-सलाम नाज़िल फ़रमा। और तमाम सहाबा-ए-केराम और उनके साथ अपनी रहमत से हमसे भी राज़ी हो जा, ऐ सबसे बढ़कर रहम करने वाले।

ऐ अल्लाह! हमें अपना ज़िक्र करने, शुक्र करने और बेहतरीन इबादत करने की तौफ़ीक़ दे। ऐ अल्लाह! हमारे हक़ में हो जा और हमारे ख़िलाफ़ न हो, हमारी मदद कर और हमारे ख़िलाफ़ किसी की मदद न कर, हमें हिदायत दे और हमारे लिए हिदायत को आसान कर दे।

ऐ अल्लाह! **कुवैत** और इसके रहने वालों को हर बुराई और आफ़त से महफ़ूज़ रख, और इस देश को और मुसलमानों के सारे देशों को अमन-ओ-सुकून का केंद्र बना दे। ऐ अल्लाह! सरहदों

के रक्षकों, सिक्योरिटी फोर्सेज, रक्षा मंत्रालय, नेशनल गार्ड्स और मुल्की सलामती पर तैनात सारे जवानों की हिफ़ाज़त कर और उनके क़दमों को मज़बूत रख।

ऐ अल्लाह! हमारे **अमीर और वली अहद** को उन कामों की तौफ़ीक़ दे जिनसे तू मोहब्बत करता है और राज़ी होता है, और उन्हें नेकी व तक़्वे के रास्ते पर लगा दे।

और हमारी आख़िरी पुकार यही है कि सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो सारी दुनियाओं का पालने वाला है।

ख़ुत्बात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी